आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 06-10-14

अपने ज्ञान और योग से हम विकारी आत्माओं को सम्पूर्ण निर्विकारी देवी-देवता बनाने वाले, ऊंचे ते ऊंच बेहद के बाप ने कहा, "मीठे बच्चे - आर्डर करो कि हे भूतों (विकारों) तुम हमारे पास आ नहीं सकते, तुम उनको डराओ तो वह भाग जायेंगे."

कलियुग के अन्त में अभी विश्व की सर्व आत्माओं में विकारों रूपी पांच भूत, काम-क्रोध-लोभ-मोह-अहंकार, कम या ज्यादा रूप में जरूर हैं. बाबा हमें ईश्वरीय ज्ञान और योग सिखलाकर, हमारी आत्मा को इतनी शक्ति प्रदान करते हैं जिसे हम आत्माये इस पर विजय पा सके. बाबा के साथ हम आत्माये योग करते है तब बाबा हमारी आत्मा में दिव्य-गुणों को इमर्ज हैं और शक्ति भरते हैं. जब हमारी आत्मा गुणों और शक्तिओं से भरपूर हो जाती हैं तब हम आत्माये ईश्वरीय ज्ञान से इस पांच विकारों पर विजय पाने में सक्षम बनते हैं. अगर हम बाप के साथ योग में कच्चे होंगे तो हमारे में इन विकारों को जितने की शक्ति नहीं होगी इसलिए कभी-कभी ज्ञान होने पर भी हम इन विकारों के वश हो जाते हैं. फिर हार खा लेने के बाद मालूम पड़ता है कि हमने तो माया से हार खाली.

इसलिए बाबा हमें योग पर हमेशा ज्यादा जोर देते हैं. फिर ज्ञान का उपयोग कर आत्मा को स्वराज्य अधिकारी भी बनाना हैं कि झट से मालूम हो की माया का वार है तो उसे ज्ञान की तलवार में योग का जोहर भर समय पर काट सके.

अभी बाबा हमारे से इससे आगे का स्टेज ऐसा चाहते है कि, जहॉ हम आत्माये इन विकारों को पड़कार सके कि हे मूतो (विकारों) तुम हमारे पास आ नहीं सकते, हम आत्माये, सर्व-शक्तिमान के बच्चे मास्टर सर्व-शक्तिवान है. इतना अचल और अड़ोल निश्चय है तो यह भूत, आपे ही भाग जायेंगे.

इन विकारों पर विजय पाने के लिए हमारी आत्मा को नीचे बताई हुई दो बातों का अभ्यास करना ही हैं.

१. निश्चय बुद्धि विजयंती. - बाबा ने हमें ज्ञान में सिखलाया है कि हर ब्राह्मण आत्मा को चार मुख्य बातों में निश्चय बुद्धि बनना ही हैं. स्वयं में, बाबा में, ड्रामा में और परिवार में. स्वयं में निश्चय यानी यह पक्का हो कि हम आत्मायें हैं. बाबा में निश्चय माना बाबा जिस रूप में पार्ट बजा रहे है उसे यथार्थ जानना और बाबा को मानना माना बाबा कि श्रीमत् को ऐक्युरेंट फोलो करना, फिर अपना बनाना माना तन-मन-धन-सम्बन्ध-संकल्प से बाबा के बेहद के यज्ञ की हड्डी सेवा करना. ड्रामा में निश्चय इस सृष्टि चक्र का ड्रामा ऐक्युरेंट है और मेरे लिए बहुत-बहुत कल्याणकारी हैं - यह निश्चय होना. परिवार में निश्चय माना में आत्मा अभी ईश्वरीय परिवार की हूँ. मेरे साथ यह सब आत्मायें भी देवी-देवता बनने वाली है - यह निश्चय होगा तो हम सब को रिस्पेक्ट (respect) देंगे और हमें भी सब रिस्पेक्ट (respect) मिलेगा.

२. इच्छा मात्रम अविधा. - इस ईश्वरीय ज्ञान में आत्मा को आगे बढ़ने कि चाबी है - इच्छा-मात्रम अविधा. हम ईश्वरीय सेवा में कितना भी आगे बढ़े लेकिन अन्दर में कोई मान-शान की इच्छा का संकल्प भी न आये. अन्दर में कोई भी बात में "मेरा-पन" न हो - यह चेक करना हैं.

खुद को निमित समझकर बाबा के यज्ञ कि सेवा करना, ट्रस्टी समझकर कार्य-भार चलाना और साक्षी बनकर ड्रामा में हरेक का पार्ट देखना - यह अगर पक्का है तो हम विजयी आत्मा जरूर बनेंगे.

ॐ शांति.